महान वैज्ञानिकों पर यह पुस्तक श्रृंखला खासकर बच्चों के लिए तैयार की गई है। इन्हें पढ़कर बच्चों को लगेगा कि विज्ञान अद्‌भुत है और इसी के कारण संसार हमारे रहने के लिए बेहतर बन गया है।

इन पुस्तकों में वैज्ञानिकों के बचपन की घटनाओं को सम्मिलित किया गया है। बच्चे यह जान सकेंगे कि ये महान वैज्ञानिक अपने बचपन में उनके जैसे ही थे और अगर मेहनत, लगन तथा आत्मविश्वास से काम करें तो वे भी एक दिन इन वैज्ञानिकों की तरह ही अपनी मंज़िल पा सकते हैं।

"हमारा एक सपना है कि हमारे प्रयत्नों से एक दिन मनुष्य उड़ान भर सके। आज हम जिस खिलौने ग्लाइडर को उड़ा रहे हैं वह एक दिन वायुयान बनकर इस नीले आकाश को मापेगा।" यह सपना विलबर और ओरविल राईट बन्धुओं का था।

इस पुस्तक की लेखिका मैरी जोसफ़ ने दिल्ली और बम्बई के विश्वविद्यालयों में अंग्रेज़ी पढ़ाई है, और अपने प्रिय पाठकों, बच्चों के लिये कई पुस्तकें लिखीं हैं। इसका अनुवाद हिन्दी के लेखक श्री महावीर सिंहल ने किया है।

महान वैज्ञानिक

राईट ब्रदर्स

मैरी जोसफ़

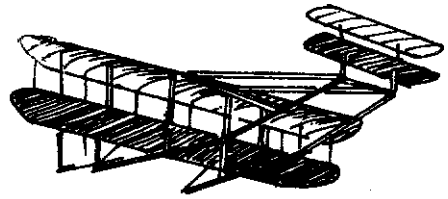

उड़ना — एक कल्पना

संयुक्त राज्य अमरीका में डेटन, ओहियो में होथॉर्न स्ट्रीट पर 7 नंबर का एक छोटा, सफेद और दो-मंजिला मकान था। इस मकान की छत नुकीली और दरवाज़े-खिड़कियां हरे रंग के थे और मकान के पिछवाड़े हैण्ड-पम्प ही पानी का एक मात्र ज़रीया था।

एक दिन इसी मकान में दो छोटे बच्चे अपने पिता का, जो बाहर गए थे, बेताबी से इंतज़ार कर रहे थे। उनके पिता बाहर से लौटने पर उनके लिए हमेशा कुछ न कुछ उपहार लाते थे। वे दोनों बच्चे यह सोच रहे थे कि इस बार उनके पिता क्या उपहार लाते हैं।

विलबर और ओरविल राईट को अपने पिता के आने का ज़्यादा इंतज़ार नहीं करना पड़ा क्योंकि तभी उनके पिता

मिल्टन राईट ने कमरे में प्रवेश किया।

"पापा, आप आगए," वे दोनों बोले, "हमारे लिए क्या लाए हो ?" दोनों भाई अपने पिता के हाथ में छिपे उपहार को देखने की कोशिश कर रहे थे।

"कोई खास नहीं। इसलिए लो मैं इसे दूर फेंक देता हूं।" पिता ने कहा और देखते ही देखते उन्होंने दोनों बच्चों के सामने अपने हाथों का वह उपहार हवा में उछाल दिया।

यह एक खिलौना था। ग्लाइडर खिलौना, जो कमरे में उड़ रहा था। दोनों भाई इस ग्लाइडर को उड़ते हुए देखकर खुशी से झूम कर चिल्ला उठे।

मिल्टन राईट के घर में इस ग्लाइडर की उड़ान बहुत महत्वपूर्ण रही। इस उड़ान ने दोनों बच्चों, विलबर और ओरविल के मन पर एक अमिट छाप छोड़ दी। जैसे ही उन्होंने कमरे में खिलौने ग्लाइडर को उड़ते हुए देखा तो उनके मन में यह विचार आया कि वे एक वायुयान बनाएं और उसे उड़ाएं।

मिल्टन राईट एक पादरी था। पादरी ईसाइयों का धर्मगुरू होता है। एक दिन एक कालेज के प्रिंसिपल से बातें करते हुए पादरी मिल्टन राईट ने कहा, "अविष्कार की जाने वाली हरेक वस्तु का पहले ही अविष्कार हो चुका

होता है ।"

"यह सच नहीं हैं," प्रिंसिपल ने जवाब दिया, "पचास वर्ष में मनुष्य चिड़िया की तरह उड़ना सीख जाएगा ।"

पादरी मिल्टन राईट ने उनकी बात का उत्तर देते हुए कहा, "केवल देवदूत ही उड़ सकते हैं ।" लेकिन उन्हें इसके बारे में ज़रा भी पता नहीं था कि उन्हीं के घर में दो बच्चे आकाश में उड़ने का सपना देख रहे थे ।

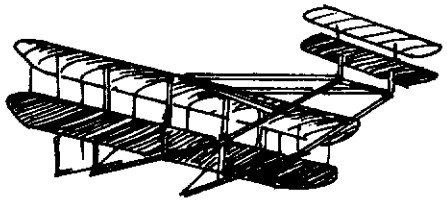

प्रयोग द्वारा शिक्षा

मिल्टन राईट के घर में प्रयोग करना एक आम बात थी। उनके यहां प्रयोग करने को बहुत महत्व दिया जाता था। जब ओरविल नौ वर्ष का हुआ तब उसने अपने पिता को, जो अपने काम से बाहर गए हुए थे, एक पत्र लिखा :

"मैंने कल ही एक डिब्बे को लेकर उसमें पानी भरा। फिर उसे जलते हुए स्टोव पर रख दिया। कुछ देर बाद पानी गरम होकर उस डिब्बे से बाहर निकलने लगा — करीब एक फुट। मुझे इसमें बड़ा आनन्द आया। मैं मशीन के प्रयोग करना चाहता हूं, पापा।"

ये शब्द एक बच्चे के थे जो बाद में बड़ा होकर एक महान वैज्ञानिक बना।

उनके नाना का नाम कोएरनर था। प्रयोग करने के लिए रिचमंड में नाना कोएरनर के खुले मैदान से अच्छा और कोई स्थान नहीं था। वह बहुत सुन्दर स्थान था जहां प्रयोग तथा आविष्कार करने के लिए बहुत जगह थी। इस कारण नाना कोएरनर के कारण ही दोनों भाईयों का मशीन और प्रयोग के प्रति झुकाव हुआ। उनकी माता को भी औजारों से लगाव था। वह भी कभी-कभी अपने बच्चों के लिए लकड़ी के खिलौने बनाया करती थीं।

एक दिन माता द्वारा बनाई एक गाड़ी को देखकर विलबर ने कहा, "मां, तुमने यह बहुत अच्छी गाड़ी बनाई है। ओरविल इसे देखकर खुश होगा और तुमको हमेशा याद रखेगा।"

तभी ओरविल कमरे में घुसा। वह बाहर अपने मित्र एड साइन्स के साथ खेल रहा था। उसने मां द्वारा बनाई हुई गाडी को देखकर कहा, "वाह मां, तुम बहुत अच्छी हो। काश, मैं भी तुम्हारी तरह ही गाड़ी बना सकता।"

उस वर्ष क्रिसमस पर विलबर ने अपने भाई ओरविल को औजारों का एक डिब्बा भेंट में दिया। ओरविल इन औजारों से नए-नए प्रयोग करके तरह-तरह की मशीनें बनाता रहता। उसने लकड़ी और धातु के कुछ अक्षर बनाए जो छपाई के काम आते थे। उनके पिता पादरी

मिल्टन राईट का अपना छापाखाना था। ओरविल ने लकड़ी के इन अक्षरों को अपने पिता के छापेखाने में इस्तेमाल किया।

अपनी इस सफलता के बाद ओरविल ने खुश होकर अपने भाई विलबर से कहा, "विलबर, देखो मैंने क्या बनाया है।"

छपाई की मशीन में विलबर की रुचि भी ओरविल जैसी ही थी। इसके बाद उन दोंनो ने एक साप्ताहिक-पत्र प्रकाशित किया। ओरविल उस पत्र का प्रकाशक बना और विलबर सम्पादक। छापेखाने में काम करते हुए उन्होंने मशीनों के बारे में बहुत ज़्यादा सीखा। जब भी छापेखाने की मशीन खराब हो जाती, वे उसे स्वयं ही ठीक कर लेते। लेकिन कभी-कभी मशीन ठीक करने में ज़्यादा समय लग जाता और कभी मशीन को ठीक करना मुश्किल होता। जैसे उस दिन जब बार-बार कोशिश करने पर भी वह ठीक नहीं हो रही थी।

ओरविल कहता, "मैं इस काम को छोड़ दूंगा।"

विलबर भी उसका साथ देता, "यह काम करना बहुत मुश्किल है।"

लेकिन उनके पिता उनका हौसला बढ़ाते। वे उन्हें

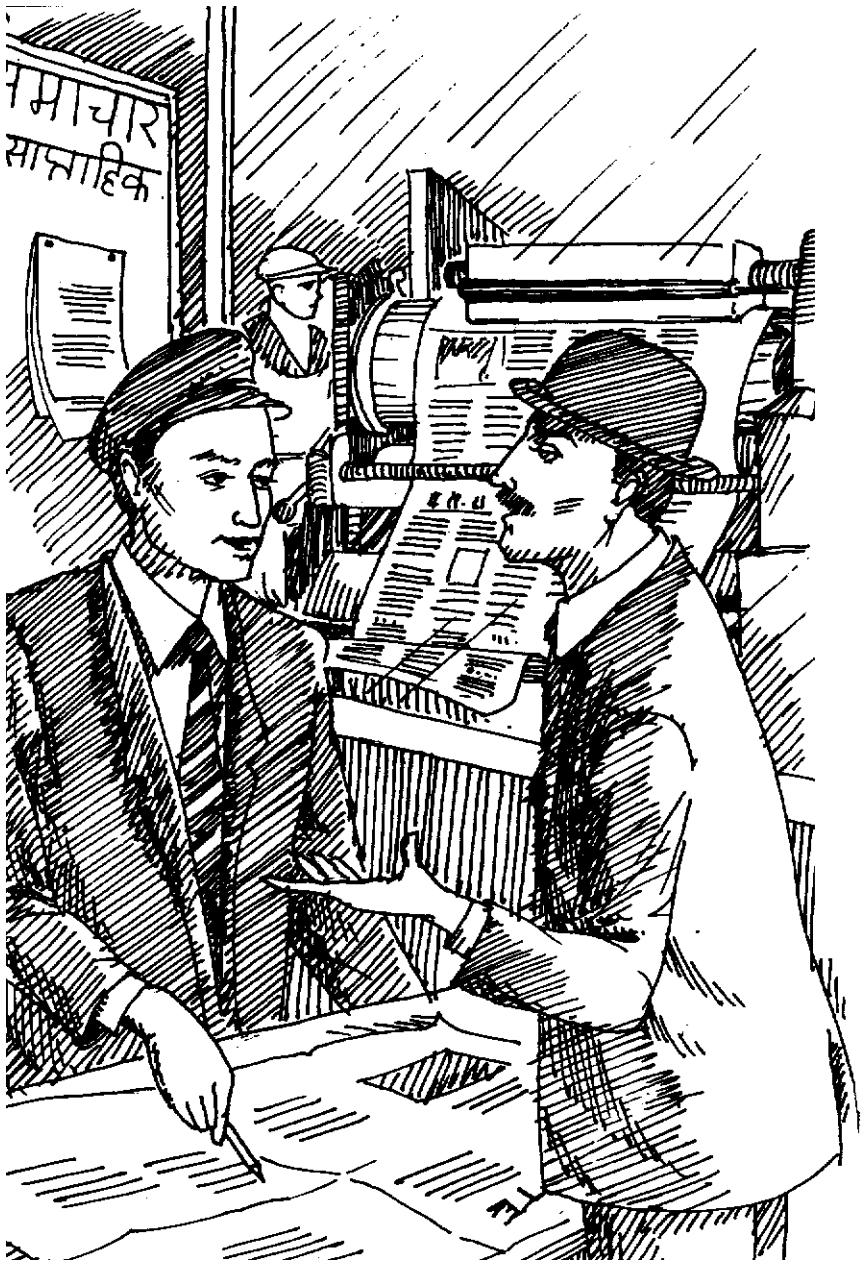

हिम्मत दिलाते हुए कहते, "हां, वास्तव में यह मुश्किल काम है। लेकिन तुमको धैर्य रखना चाहिये और अपना काम करते रहना चाहिए। अंत में तुम्हें सफलता मिल जायेगी और समस्या का समाधान हो जायेगा।"

जब भी कभी किसी काम के सफल होने में देर हो तो हमें धैर्य नहीं खोना चाहिये। इसका मतलब काम के प्रति मायूस होकर उसे बीच में ही छोड़ना नहीं चाहिये।

दोनों भाइयों ने अपने छापेखाने में करीब दस वर्ष तक काम किया और फिर इसके बाद उसे छोड़ दिया।

कभी-कभी कोई काम शुरू करने के बाद उसे और आगे बढ़ाने में तुम्हारी रुचि नहीं होती है। तुमने शुरू में अपनी रुचि होने के कारण नाचना या गाना सीखना प्रारंभ किया था या शायद कराटे सीखने में रुचि होने के कारण तुमने कराटे सीखना शुरू कर दिया। लेकिन कुछ समय के बाद इन कामों में रुचि नहीं रही।

माना कि विलबर और ओरविल ने छापाखाना बन्द कर दिया । उसमें उनकी रुचि खत्म हो गई। लेकिन छापेखाने में काम करते हुए उन्होंने मशीनों के बारे में बहुत कुछ सीखा।

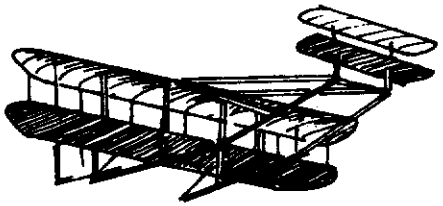

साइकिल की तरफ रुझान

राईट बन्धुओं ने अब अपनी रुचि साइकिल में दिखाई, जिसकी मशीन के बारे में वे निपुण हो गए थे। उन दिनों जब वे अपने नाना के खुले मैदान पर काम करते थे तब ओरविल ने विलबर से तीन डालर उधार लेकर पहली बार एक साइकिल खरीदी थी। उस समय बाजार में केवल एक ही तरह की साइकिल मिलती थी जिसे पेनी-फारदिंग कहा जाता था। पेनी और फारदिंग इग्लैंड में चलने वाले दो सिक्कों के नाम थे। फारदिंग पेनी से छोटा था। इस साइकिल का अगला पहिया बड़ा होता था और पिछला पहिया छोटा। इसकी सीट जमीन से चार-पांच फीट ऊंची होती थी जो शायद बहुत खतरनाक थी।

ओरविल जब बीस वर्ष की आयु के लगभग हुआ तब डेटन में एक नई तरह की साइकिल बाजार में आई। इस साइकिल के अगले और पिछले दोनों पहिये बराबर थे। तुम आज यह कह सकते हो कि यह कोई नई बात नहीं है, लेकिन सन् 1890 में यह एक नई बात थी।

राईट बन्धुओं को साइकिल से बहुत लगाव हो गया, जैसे कि आज तुमको वीडियो खेलों से लगाव हो जाया करता है। लेकिन उनके इस लगाव ने उन्हें मशीनों को और अच्छी तरह से समझने का मौका दिया। उन्होंने छापेखाने को अपने मित्र एड साइन्स को दे दिया और सड़क के किनारे साइकिल की एक दुकान खोल ली। इस दुकान में वे साइकिल किराए पर दिया करते, उनकी मरम्मत किया करते और बेचा करते।

विलबर और ओरविल दोनों केवल भाई ही नहीं थे। वे अच्छे मित्र और सहयोगी भी थे। एक बार विलबर ने कहा भी था, "ओरविल और मैं दोनों साथ-साथ रहते, खेलते और यहां तक कि एक साथ सोचते हैं।"

दोनों भाइयों में विलबर अपने भाई ओरविल से चार वर्ष बड़ा था। जैसे-जैसे वे बड़े हुए, उनकी उम्र में कोई खास फर्क नहीं दिखाई देता था। एक जैसे दिखाई नहीं

देनें पर भी उनकी बहुत ही बातें एक-सी होती। उनकी आवाज एक-सी थी और वे दोनों ही न तो कभी धूम्रपान करते और न ही शराब पीते थे।

तुमने क्या यह मुहावरा सुना है, 'खाली दिमाग शैतान का कारखाना है'? इसका मतलब है कि अगर तुम खाली बैठोगे अर्थात् कुछ भी नहीं करोगे तो हो सकता है कि तुम ऐसे गलत काम कर बैठो जिन पर तुमको पछताना पड़े या शर्म आए। लेकिन विलबर और ओरविल यह जानते ही नहीं थे कि खाली बैठना क्या है। उनके पास अपने दिमाग को व्यस्त रखने के लिए बहुत से काम थे। इन सबमें प्रमुख था उनका सपना वायुयान बनाकर उसे उड़ाने का।

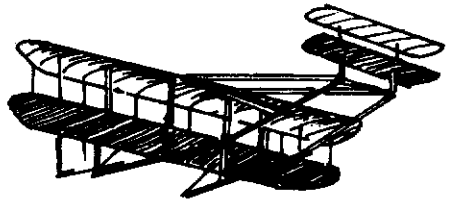

सपने की तलाश

राईट बन्धुओं ने पढ़ा था कि जर्मनी के ओटो लिलिन्थल ने सन् 1889 में एक ग्लाइडर बनाया था। इस खबर के बाद उड़ान की तरफ उनकी रुचि ज्यादा बढ़ गई थी।

लेकिन एक दिन एक दु:खपूर्ण घटना हो गई। ओटो लिलिन्थल अपने बनाए हुए ग्लाइडर में उड़ान भर रहा था कि वह नीचे गिर पड़ा। इस दुर्घटना ग्रस्त ग्लाइडर से वह बाहर नहीं निकल पाया। वास्तव में ओटो लिलिन्थल की मृत्यु हो गई थी।

उसकी मृत्यु से राईट बन्धुओं ने एक निर्णय लिया। उन्होंने उस वायुयान को बनाने का संकल्प कर लिया। एक विचार उनके दिमाग में आया कि वे उड़ने में मनुष्य की सहायता करेंगे। यह विचार जीवन भर उनके दिमाग में घूमता रहा और इसी कार्य को करने के लिए उन्होंने अपने आप को समर्पित कर दिया।

लेकिन अपने इस सपने को पूरा करने के लिए उन्हें बहुत परिश्रम करना पड़ा। उन्हें बहुत खोज करनी पड़ी। अर्थात् नई-नई बातों का पता लगाना पड़ा। और उन्होंने निश्चय किया कि पहले वे इस बात का पता करेंगे कि अन्य व्यक्तियों ने इस बारे में क्या किया है ? उन्होंने संयुक्त राज्य अमरीका की राजधानी वाशिंगटन डी.सी. में स्थित स्मिथ-सोनियन इन्सटीट्यूट (Smithsonian Institute) को लिखा और बहुत-सी जानकारी प्राप्त की। वे दिन-रात घंटों सुबह से शाम तक उड़ते हुए परिन्दों को देखते रहते। वे देखते कि चिड़िया ऊपर और नीचे तथा अगल-बगल में इच्छानुसार उड़ सकती है।

एक दिन कबूतरों को उड़ते हुए देखकर और उनकी उड़ान का अध्ययन करके वे खुशी से झूम उठे। उन्होंने कहा, "दबाव के कारण ही ये परिन्दे हवा में उड़ने में सफल होते हैं।"

बहुत वर्षों बाद, जब ओरविल बूढ़ा हुआ तब उसने परिन्दों की उड़ान की गोपनीयता की एक जादूगर के जादू की गोपनीयता से तुलना की। उसने कहा, "एक बार जब तुम्हें कोई काम करने की तकरीब का पता चल जाता है तब तुम उन वस्तुओं को देखने लग जाते हो जिन पर तुमने

कभी ध्यान भी नहीं दिया था या जब तुम उनके बारे में जानने की सोचते तक नहीं थे।"

लेकिन उड़ान और वायुयान के बारे में कार्य करने के साथ-साथ उन्होंने अपनी साइकिल की दुकान को नहीं छोड़ा। एक दिन उनकी दुकान पर एक ग्राहक आया। विलबर ग्राहक से बातें करता रहा और ग्राहक साइकिल के ट्यूब का निरिक्षण करता रहा। बात करता हुआ वह ग्राहक जिस लम्बे डिब्बे में रबड़ की ट्यूब आई थी, उसे अनजाने में ही मोड़ने लगा।

तभी विलबर चिल्ला उठा, "अब मैं जान गया। मुझे हमारे वायुयान के पंखों को दाईं और बाईं तरफ एक दूसरे की विपरीत दिशा में मोड़ना है।" उसकी यह बात सुनकर उस ग्राहक को बहुत आश्चर्य हुआ।

उस ग्राहक ने कहा, "मेरे प्यारे भाई, तुम किसके बारे में बातें कर रहे हो। मैं यह समझ नहीं पा रहा हूं।"

लेकिन विलबर ने अपनी बात पूरी करते हुए कहा, "मैं तुम्हें यह बता रहा हूं कि अब यह उड़ सकता है।"

फिर वह दुकान से झटपट बाहर निकला। उसने ओरविल को आवाज दी, "ओरविल, कहां हो तुम?" और ग्राहक यह सोचता ही रहा कि शायद यह दुकानदार पागल हो गया है।

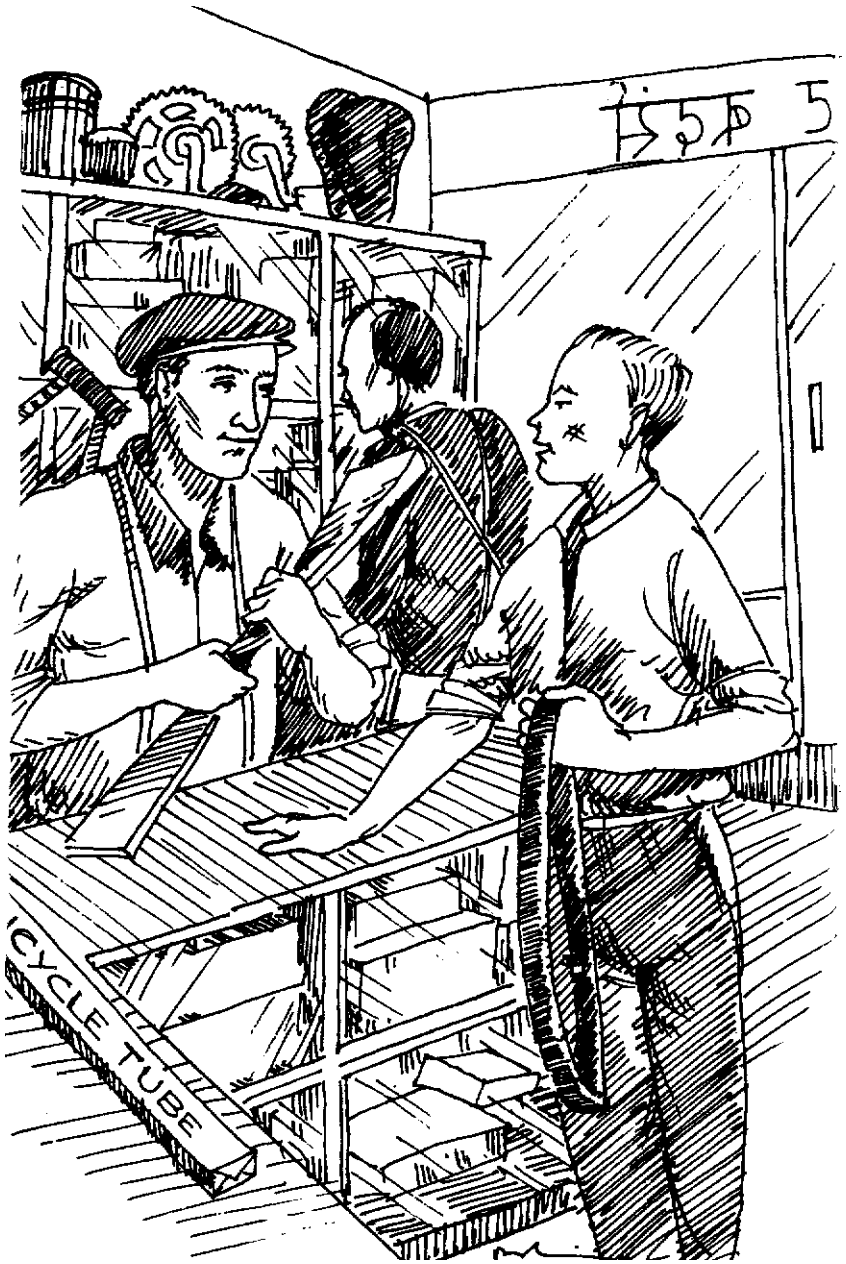

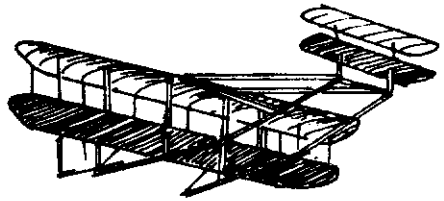

किट्टी हाक, उत्तरी केरोलिना

वर्षों से दोनों भाईयों ने मशीन तथा औज़ार बनाने के लिए लकड़ी और धातु का उपयोग किया था । मशीन बनाने में वे निपुण हो गए थे । उनमें बुद्धि भी थी । और अगर अपने अविष्कार के लिए अपेक्षित वस्तु नहीं मिलती तो वे उसे बना भी लेते थे ।

एक दिन विलबर ने ओरविल से कहा, "मैं समझता हूं कि अब समय आ गया है ।"

ओरविल ने पूछा, "किस बात का समय, विल ।"

विलबर ने खुश हो कर कहा, "हमें अपना ग्लाइडर बनाने का समय आ गया है । हमनें लकड़ी और धातु का इतना उपयोग कर लिया है कि अब हमें ग्लाइडर बनाने में सफलता मिल सकती है ।"

"हां, अगर हम अपनी योजना को सोच-विचार कर समझदारी से पूरा करें और पिता जी के कहने के अनुसार धैर्य रखें," ओरविल ने कहा।

विलबर और ओरविल ने अपना स्वयं का ग्लाइडर बनाने के लिए जी-तोड़कर मेहनत की। उनकी बहन केथेरीन ने डेटन में रह रहे पिता पादरी मिल्टन राईट को लिखा, "पापा, विलबर दिन भर निशान लगा-लगाकर सिलाई मशीन चलाता रहता। घर में ऐसी कोई खाली जगह नहीं है जहां मैं खड़ी भी हो सकूं। फिर अगले सप्ताह इसी समय जब वे यहां से चले जाएंगे तो मैं अकेली रह जाऊंगी। मैं चाहूँगी कि अपने आस-पास उनका शोर सुन सकूं।"

किट्टी हाक, उत्तरी कोरोलिना में दूर-दूर तक बालू के टीले और पहाड़ी क्षेत्र था। ग्लाइडर की उड़ान को परीक्षण करने का यह एक सही स्थान था। एक दिन वह भी आया जब कि राईट बन्धुओं का ग्लाइडर बन कर तैयार हो गया। वे उस ग्लाइडर को खींच कर पहाड़ की चोटी पर ले गए। विलबर इसके अंदर चला गया। अभी तक ओटो लिलिन्थल जैसे ग्लाइडर उड़ाने वाले व्यक्तियों ने ग्लाइडर में स्वयं को खड़ा कर उड़ान भरी थी। लेकिन विलबर

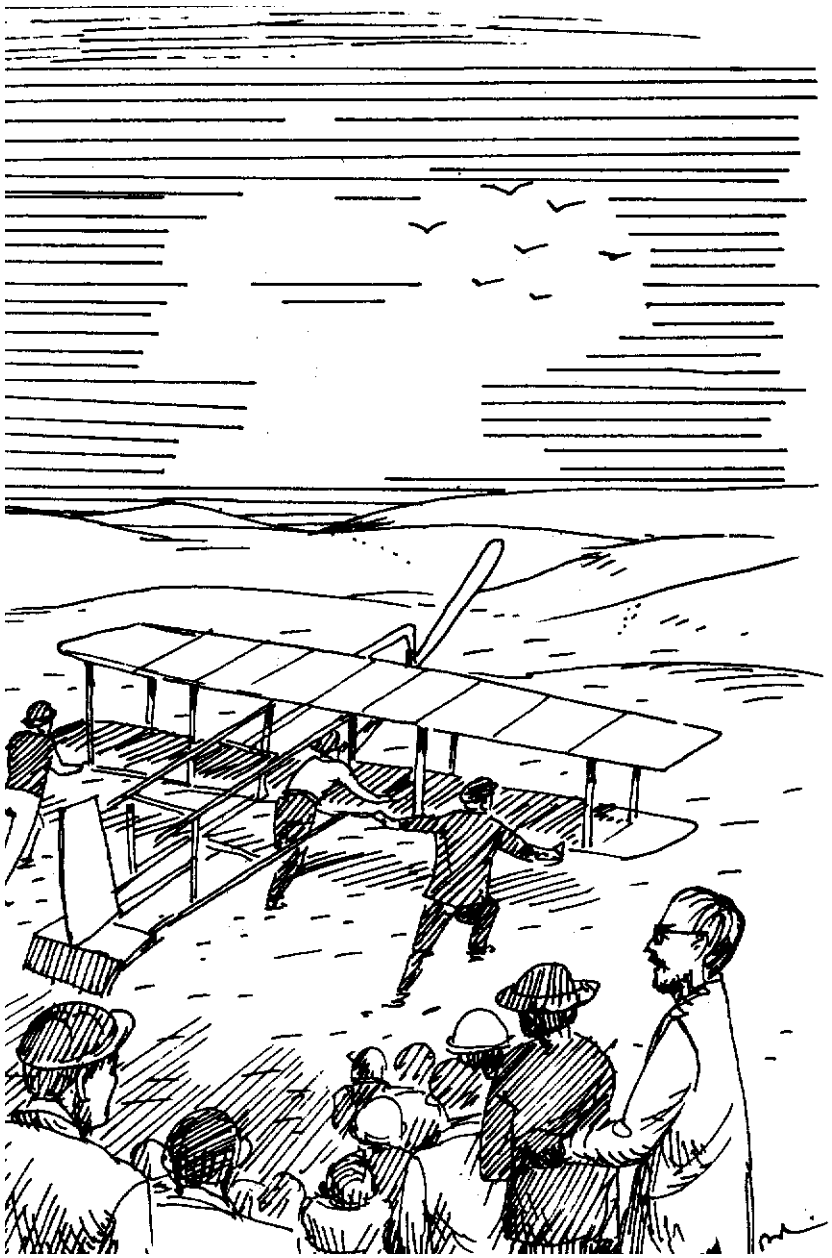

ग्लाइडर में लेट गया था और ओरविल ने उसे पहाड़ी से नीचे धकेल दिया।

जैसे ही ग्लाइडर ने उड़ान भरी दोनों भाइयों ने प्रसन्नता से कहा, "हमें अपने काम में सफलता मिल गई।"

इसके बाद विलबर ने मजाक में कहा कि, "ग्लाइडर ने सोचा कि वह आकाश को भेद देगा, लेकिन फिर अपनी मूर्खता समझकर वह धीरे-धीरे पृथ्वी पर उतर आया।"

अपनी प्रथम ग्लाइडर-उड़ान के बारे में ओरविल ने अपनी डायरी में लिखा कि, "उसकी इस सफल उड़ान में किस तरह कपड़े, लकड़ी की बेंत और मशीन उसे चारों तरफ से घेरे रहे और उसे कहीं भी जरा सी भी खरोच नहीं आई। इसके लिए उसके ऊपर परमात्मा की ही कृपा रही।

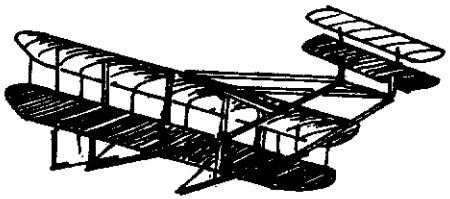

ग्लाइडर को इंजन की आवश्यकता

राईट बन्धुओं को उनके पिता ने कुछ दिन पहले जो खिलौना दिया था उसी की तरह यह ग्लाइडर भी उड़ सकता था। लेकिन उसी ग्लाइडर की तरह यह भी कुछ समय बाद जमीन पर गिर पड़ा।

मायूस होकर ओरविल ने कहा, "मेरी अब समझ में आया कि यह हवा में क्यों नहीं ठहर सकता।"

"तुम्हें धैर्य नहीं खोना चाहिये, ओरविल। याद है पापा ने धैर्य रखने के बारे में कहा था," विलबर बोला। वह इस प्रयोग को छोड़ना नहीं चाहता था।

"मैं जानता हूं कि..." उन दोनों ने एक साथ ये शब्द कहे और फिर वे एक साथ ही हंस दिए।

"पहले तुम बोलो, विल !" ओरविल ने अपने बड़े

भाई से कहा ।

"मैं सोचता हूं कि यान के पंखों के नीचे हवा के दबाव को और अधिक ताकतवर करना होगा," विलबर ने कहा, "इस तरह से यह ग्लाइडर ज़मीन से ऊपर उठकर ज़्यादा देर तक हवा में रह सकेगा और इंजन से ऐसा हो सकता है ।"

ओरविल के दिमाग में भी यही बातें थी । अत: उसे कुछ कहने का मौका ही नहीं मिला । उन दोनों के सवाल का उत्तर एक इंजन ही था । ग्लाइडर में इंजिन लगाने से यह मशीन हवा से अधिक भारी हो जाती है । इसे ही वायुयान कहते हैं ।

राईट बन्धुओं ने जो ग्लाइडर बनाया था उन्होंने उसका अध्ययन किया । उन्होंने कागज़ पर नक्शा तैयार किया । फिर उन्हें यह पता लगाना था कि जिस इंजन को उन्होंने लगाया है वह क्या ग्लाइडर के लिये भारी रहेगा ? इसको उन्हें ज्ञात करना था ।

एक बार फिर उन्हें मायूसी का सामना करना पड़ा क्योंकि कोई भी व्यक्ति उन्हें इंजन बेचने को तैयार नहीं था ।

एक दुकानदार ने अपने एक मित्र से कहा, "ये दोनों

व्यक्ति पागल हैं । ये सोचते हैं कि ये कोई देवदूत हैं । ये हवा में उड़ना चाहते हैं ।"

लेकिन विलबर और ओरविल के पास उससे जिरह करने का समय नहीं था । वे अपने दिमाग और हाथों को इस्तेमाल करते थे । उन्होंने अपने आप ही एक इंजन बना लिया । उसे उन्होंने यान में लगा दिया । उन्होंने उसे चालू भी करना चाहा । लेकिन आविष्कार को सफल बनाने में बहुत ज़्यादा मेहनत करनी पड़ती है । सफलता प्रथम बार ही आसानी से नहीं मिल जाती । जिस इंजन को उन्होंने बनाया था वह चल ही नहीं पाया ।

लेकिन विलबर ने हिम्मत नहीं छोड़ी । उसने ओरविल से कहा, "ओरविल, यह इंजन अवश्य काम करेगा । हम अंत में इसे चलने को मजबूर कर देगें ।"

और उन्होंने ऐसा ही किया । और एक दिन बहुत शोर करने और धुआं छोड़ने के बाद यान में लगा इंजन चल उठा ।

राईट बन्धु खुशी से झूम उठे और बोले, "आखिर यह इंजन काम करने लग ही गया ।"

लेकिन अभी तक वायुयान तैयार नहीं हुआ था, केवल इंजन ही बना था । उन्होंने जब उस इंजन को

ग्लाइडर में लगाया तब उन्हें पता लगा कि यह तो बहुत भारी है। इसमें कुछ सुधार करने पड़ेंगे। नक्शे में, ग्लाइडर में और इंजन में, सभी में सुधार करने होंगे। अगर तुम किसी वस्तु को बेहतर बनाना चाहते हो तो तुम्हें उसमें सुधार करने के लिए तैयार रहना चाहिये। तुम्हें बहादुर बनना चाहिए और यह कहने के लिए कि तुम गलती पर थे, तैयार रहना चाहिए। विलबर और ओरविल में अपनी गलती स्वीकार करने हिम्मत थी। और फिर उनके लिए एक दिन किट्टी हाक में वह हुआ।

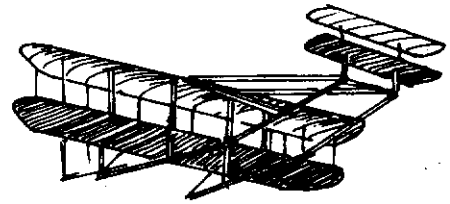

एक सपना साकार हुआ

विलबर और ओरविल ने यह विचार किया कि पहले कौन उड़ान भरे। दोनों ने यह निर्णय कर लिया कि वे एक साथ एक ही यान में उड़ान नहीं भरेंगे, क्योंकि अगर उड़ान भरते समय एक को कुछ हो गया तो दूसरा तो वायुयान का आविष्कार जारी रख सकता है।

अत: पहले कौन उड़ान भरे, इसका निर्णय करने के लिए दोनों ने सिक्का उछाला। और पहली बार उड़ान भरने का सौभाग्य विलबर को मिला। 17 दिसम्बर 1903 का वह स्वर्णिम दिन आया जब प्रथम बार जमीन से वायुयान हवा में उड़ा। अपनी कठिन मेहनत और लगन को साकार होते देखकर दोनों भाई विलबर और ओरविल की प्रसन्नता का ठिकाना नहीं रहा। भूमि से ऊपर आकाश

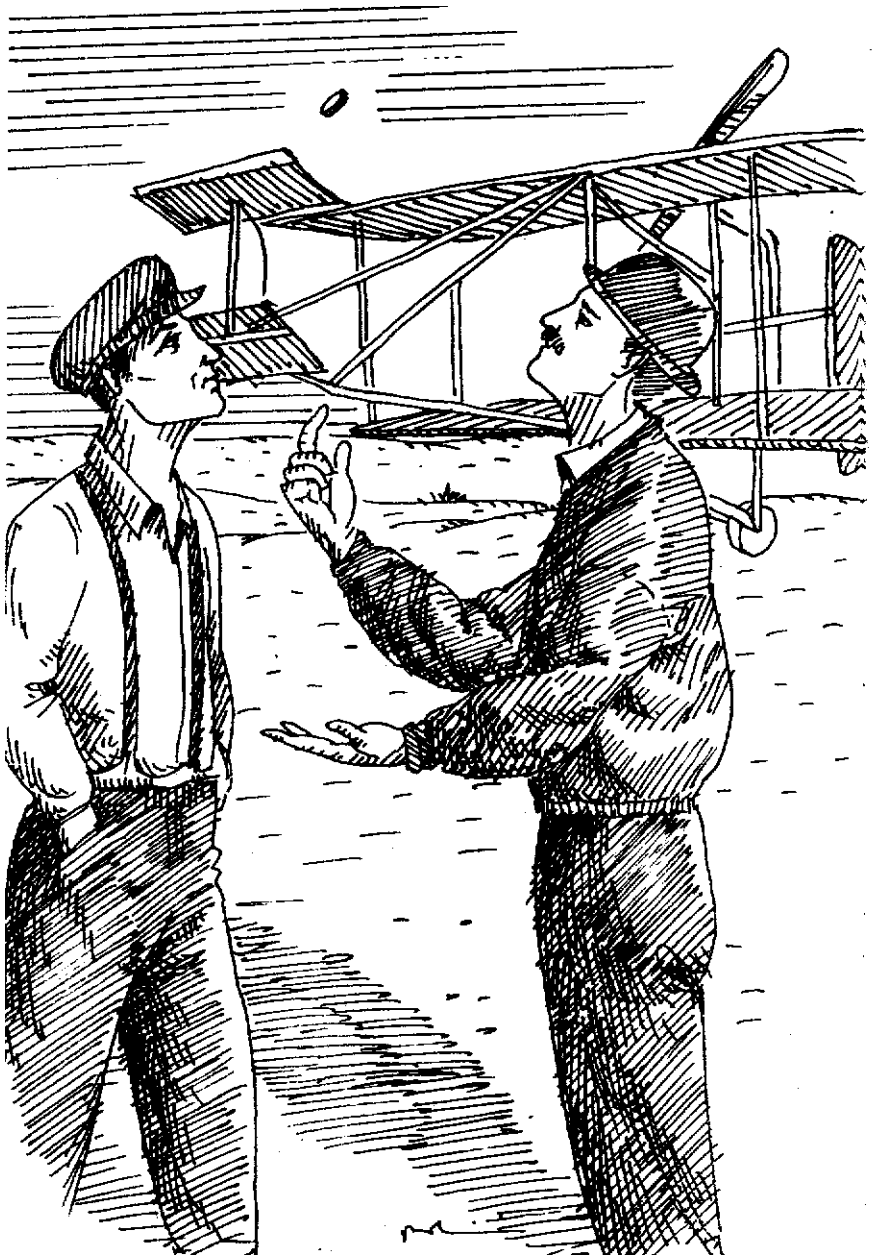

को छूने का आनन्द और ऐसी मशीन बनाने की खुशी का बखान दोनों भाइयों के लिए बहुत मुश्किल था।

उन्हें उड़ान भरते हुए असंख्य लोगों ने देखा। वे सब बहुत आनन्दित हुए क्योंकि अब विश्व वायुयान के युग में प्रवेश कर चुका था। 1903 का वर्ष दोनों राईट बन्धुओं के जीवन में बहुत महत्वपूर्ण रहा। सभी नागरिकों के मन में इन भाइयों के प्रति अपार आदर और प्रेम उमड़ आया। विज्ञान की दुनिया में यह एक अद्वितीय चमत्कार था और यह सब राईट बन्धुओं के अथक परिश्रम के कारण ही हो पाया था।

उस दिन डेटन में प्रात: जब उनके पिता पादरी मिल्टन राईट ने समाचार-पत्र खोलकर पढ़ा, तो वह उस समाचार को अपलक पढ़ते ही रहे। उनकी खुशी का कोई ओर-छोर नहीं था।

उन्होंने अपनी बेटी केथेरीन को आवाज़ देकर बुलाया, "केथेरीन, जल्दी आओ। देखो इस समाचार-पत्र में क्या छपा है।"

उन दोनों ने फिर वह समाचार पढ़ा। पढ़ते-पढ़ते अपार खुशी के कारण उनके नेत्रों से आंसू बहने लगे।

दी ओहायो टाइम्स

दिसम्बर 17, 1903

उड़ने वाली मशीन का अविष्कार
किट्टी हाक पर तीन मील उड़ी ।
उसमें कोई गुब्बारा नहीं ।
ओहायो के दो भाइयों की कई वर्षों
की कड़ी, गुप्त मेहनत सफल ।

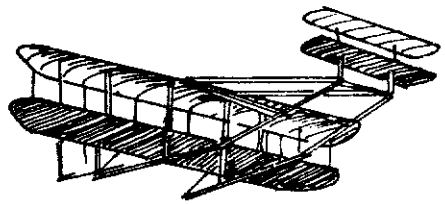

सलाम

विलबर और ओरविल राईट की गाड़ी जैसे ही किट्टी हाक से डेटन पहुंची कि स्टेशन पर अत्यधिक भीड़ होने के कारण परिवारजनों से शान्तिपूर्वक मिलने का उनका सपना साकार नहीं हो पाया। उनका स्वागत करने के लिए अपार भीड़ थी। सड़कों को गुब्बारों और खूबसूरत झण्डियों से सजाया गया था। डेटन के हरेक गिरिजाघर से घंटियों की आवाज सुनाई पड़ रही थी। दोनों भाइयों को उनकी अद्वितीय सफलता के कारण तीस तोपों की सलामी देकर सम्मानित किया गया। ओहायो अपने दो साहसी सपूत भाईयों के कार्य से धन्य हो गया था।

स्वागत-सत्कार काफी देर तक चलता रहा। संयुक्त राज्य अमेरिका के राष्ट्रपति ने दोनों भाइयों को राजधानी वाशिंगटन बुलाकर स्वर्ण पदक प्रदान कर उनका सम्मान

किया। डेटन के करीब एक हजार बच्चों ने लाल, सफेद और नीले रंग के कपड़े पहनकर अमरीका का राष्ट्रध्वज बनाकर राईट बन्धुओं को सम्मान दिया। इनके सम्मान में एक झांकी भी निकाली गई। जिसमें प्रारंभ से आज तक आवागमन के साधनों का क्रमिक विकास दिखाया गया। सबसे पहले एक दौड़ता हुआ मनुष्य था, उसके बाद एक खुला ठेला, फिर एक बैलगाड़ी और इसके बाद एक बग्घी तथा पैट्रोल से चलने वाली गाड़ी। उसके बाद गुब्बारा और सबसे अंत में राइट बन्धुओं का बनाया हुआ वायु-यान।

विलबर और ओरविल बन्धुओं को एक बहुत ही सुंदर और सजी हुई बग्घी में बिठाया गया। इसमें खूबसूरत परदे लगे हुए थे और इसे चार सफेद घोड़े खींच रहे थे। दोनों भाइयों को इस तरह एक जुलूस में ले जाया गया। दोनों भाई शान्त स्वभाव के व्यक्ति थे इसलिए वे अपने लिए किए गए इस स्वागत-सत्कार से थक से गए थे।

तभी ओरविल राईट ने अपने बचपन के दिनों के मित्र एड साइन्स से कहा, "आओ एड, तुम हमारी तरफ से दर्शकों से हाथ मिलाकर उनका अभिवादन स्वीकार करो।"

एड साइन्स और ऐलिस गाड़ी में ही थे। उन्होंने इस

काम को सहर्ष स्वीकार कर लिया और परदे के पीछे से हज़ारों दर्शकों से हाथ मिला-मिलाकर उनका अभिवादन स्वीकार करने लगे। परदा थोड़ा-सा ही खुला हुआ था, अतः दर्शक यह सोचने लगे कि प्रसिद्ध राईट बन्धु से ही वे हाथ मिला रहे हैं जबकि राईट बन्धु यह देखकर हंस रहे थे।

अमरीका के ऐरो क्लब ने रात्रिभोज का आयोजन कर दोनों राईट बन्धु विलबर और ओरविल का सम्मान किया। इस अवसर पर विलबर से कुछ संदेश देने का निवेदन किया गया। शर्मीले विलबर ने केवल इतने शब्द ही कहे, "मैं केवल एक ही बोलनेवाले परिन्दे के बारे में जानता हूं– तोता। लेकिन वह ऊंचा नहीं उड़ सकता है।"

सन् 1903 में वायुयान द्वारा प्रथम उड़ान के सात वर्ष बाद, ओरविल पहली बार अपने पिता मिल्टन राईट को उड़ान पर ले गया। 81 वर्षीय मिल्टन राईट को अपने पुत्रों के अविष्कार पर बहुत गर्व था। उड़ान भरते समय उन्होंने ओरविल से ऊंची, बहुत ऊंची, उड़ान भरने को कहा। मिलटन राईट अपने पुत्रों के अविष्कार को देखकर कितने खुश होंगे, इसका आज अंदाज लगाना बहुत कठिन है।

सन् 1903 में राईट बन्धुओं ने एक बड़ा मकान बनाने

का विचार किया। लेकिन उनका 7 हॉथॉर्न स्ट्रीट का घर और उसके पास ही लाल ईंट की बनी साइकिल की पुरानी दुकान अपने में एक इतिहास संजोए हुए थे। यही वह मकान था जहां उन्होंने वायुयान बनाकर उड़ान भरने का सपना देखा था। और उनका यह सपना साकार हुआ था। अत: इस छोटे से मकान को छोड़ना संभव नहीं था।

विलबर और ओरविल का एक बार फिर सम्मान किया गया। इस बार यह सम्मान अमरीका के प्रसिद्ध नागरिक हेनरी फोर्ड ने किया। तुम्हारे में से बहुत से बच्चों ने फोर्ड कार का नाम अवश्य सुना होगा। हेनरी फोर्ड ने इस 7 हॉथॉर्न स्ट्रीट के मकान और उस साइकिल की दुकान की एक-एक ईंट, लकड़ी के दरवाजे और खिड़कियों को ज्यों का त्यों मिशिगन के ग्रीनफ़ील्ड गांव में स्थानान्तरण करवा दिया। अगर तुम कभी मिशिगन जाओ तो इस प्रसिद्ध मकान को अवश्य देखना।

अगर तुम्हें कभी उड़ते हुए वायुयान को आकाश में देखने का मौका मिले तो तुम विलबर और ओरविल राईट बन्धुओं को अवश्य याद करना। इन्हीं दोनों भाइयों ने हमारे लिए आकाश में उड़ान भरने के द्वार खोल दिए। उनके सम्मान में तुम यह गीत अवश्य गाना, 'ये बहादुर व्यक्ति अपने वायुयान में।'